लगा देथन जेखर से ओहर आने वाला महिना मा घलो ओई कांदी मन से खेती ल करथे। विनाश विहीन कटाई के तरिका ले मात्र 80 प्रतिशत तीखुर के कांदीमन के कटाई होथे। नान्हू कांदीमन ल फिर से जगाये बर ओईच भुँईया मा गाड़ देथन ।

प्रसंस्करण– तीखुर से स्टार्च पाये बर ये कांदीमन ल दू तरिका मन से प्रसंस्करण करथन।

पुराना तरिका– आदिवासी तीखुर के प्रसंस्करण के खातिर एक ठन पुराना परंपरा वाला तरिका ल काम मा लाथे। ये तरिका मा कांदीमन ल पानी से धोके साफ पथरा मा हल्कू–हल्कू घिसथन अऊ गाड़ा पानी ल निकाल लेथन जेखर से स्टार्च बनाथन । येला पानी मा दू –तीन बार डूबोके घिस देथन अऊ ओखरसे आए अशुध्दि हर अऊ रेशा हर दूर हो जाथे। येखर कांदीमन ल मोटा गूदा (पल्प) जैसन तियार कर लेथन। येखर गूदा ल (पल्प) महिन कपड़ा मन मा छान लेथन अऊ संगे संग पानी मा मिलाके येला छाने ले पूरा स्टार्च सही ढंग मा मिलथे। ओखर बाद मा येला घाम मा सुखा लेथन जेखर से येहर कठोर हो जाथे तहं ले पीस के आटा जैसन काम मा लाथन ।ये तरिका हर बड़े स्तर मा काम मा लाथन येखर आटा मा नासपत्ती के आकार के कण हेाथे अऊ येहर अच्छा पचथे।

नया (आधूनिक तरिका)– तीखुर कांदीमन ल छीलके येला पानी से धोलेथन । धोऐ के बाद मा तेज चाकू ले येखर नान्हू –नान्हू टुकड़ा काट लेथन । तीखुर ग्राइडिंग मशीन मा पानी के संग काटे टुकड़ा मन ल डालके ओखर लुग्दी (पल्प) तियार कर लेथन। तीखुर के कांदीमन के पिसाई के दर मशीन के क्षमता पर निर्भर करत हावे। कभु–कभु एक मशीन प्रतिघंटा मा अंदाजन 30–40 किलो के पिसाई ल पिस लेथें।

पीसे हावे लुग्दी ल पर्रा सूती के कपरा मा बांध के ठंडा पानी मा बहादेथन अऊ साफ मटकामन मा दबाथन। ये तरिका से तीखुर के पर्रा स्टार्च मटका मा आ जाथे ओखर बाद मा येला जमे बर छोड़ देथन। जमे तीखुर ल हर 24 घण्टा मा एक बार मा ठण्डा पानी मा धोलेथन जेखर से ओखर अशुध्दि हर निकल जाथे। ये प्रकार से 6 दिन मा रोजाना धोके ओला निथार लेथन। ये तरिका मा तीखुर हर स्टील के थारी मा रखके घाम मा सुखालेथन अऊ बड़का–बड़का किस्टल ल पाथन ।येला सुखाके तीखुर के किस्टल ल बांध के ओखर बाद मा ओला बेंचे बर तियार कर लेथन। अक्सर येहर पता चलथे कि 10 किलो कच्चा कांदामा 1 किलो तीखुर हर मिलथे। तीखुर के संगे संग उसने च दिखे वाला गेजी कांदा घलो आथे। जोनला पहिचाने मा कठिन होथे ओखरे बर एक किलो तीखुर पाउडर पाये बर अंदाजन 15 किलो तीखुर कंद लागथे।

उत्पादन अऊ उपज– तीखुर के सफल खेती मा किसान मन अंदाजन 30 से 40 क्विंटल जरी प्रति हेक्टेयर की दर मा पा जाथे। ऐखर जरी कांदा अऊ फींगर कांदा दूनो हर शामिल होथे।

बाजार के मूल्य – तीखुर के खेती ले अंदाजन 40 क्विंटल कांदामन प्रति हेक्टेयर मिलथे। जेखर बाजार मूल्य हर 20–25 प्रति किलो तके होथे। ये प्रकार मा प्रति हेक्टेयर किसान तीखुर के खेती से अंदाजन रू. 1,00,000 के कांदा ल बाजार मा बेच के अंदाजन रू. 75,000 लाभ प्रा ति हेक्टेयर फायदा प्राप्त कर थे। फिंगर कांदा अऊ जरी कांदा दूनो हर मिलथे।

अनुवादक

आनन्द कुमार दास, आलोक कुमार थवाईत,
कु. रंजीता पटेल, श्रीमती शशिकिरण बर्वे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.– आर.एफ.आर.सी.,
मण्डला रोड, जबलपुर– 482021
फोनः 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

तिखुर

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)
डाकघर – आर.एफ.आर.सी., मण्डला रोड
जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

पहिचान– तीखुर के वानस्पतिक नाम कुरकुमा एंगसस्टी फोलिया हावे। येहर जिंजीबरेसी कुल के एक सदस्य होथे। येला कईठन भाषामन मा जैसन–संस्कृत मा टवाक्सिरा, हिन्दी मा तीखुर मराठी मा टवाखीरा तमिल मा आरारोट किंजोगु ,तेलगू मा आरारूट गद्दालू ,पलागुल्ला अऊ अंग्रेजी मा इंडीयन आरारोट के नाम से जाने जाथे। येहर हरदी जैसन पौधा होथे येला पर्रा हरदी के नाम से घलो जानथन येखर कांदा मन कपूर जैसन गंध के खातिर बनक्षेत्र मा येला आसानी से पहिचाने जाने जाथे। येखर कांदा जरी मन (राइजोम) ले मिले स्टार्च (माण्ड) के जगह मा असली आरारोट मिलाये बर काम मा आथे।

येहा बिना कंदिल जरी वाला (राइजोम) होथे। येखर जरीमन मा लंबरी गुदालु संरचनामन निकले रथे । जेखर मुड़मा थोड़कन मटमैला रंग के कांदा पाये जाथे। येखर पान 30–40 से.मी. लम्बरी ,भाला जैसन अऊ चोंची शीर्ष वाला होथे। येखुर हरदी रंग के फूल अऊ गुलाबी रंग के संगी पान ले घिरे रथे। येखर फूल हर संगी पान ले बडका होथे।

तीखुर बीच के प्रान्त के मूल जाति के होथे जोनहर पश्चिम बंगाल,मद्रास अऊ हिमालय के निचु भागमन मा अपन आप पाये जाथे। येखर अलावा मध्यप्रदेश ,छत्तीसगढ़ के पूर्वी अऊ दक्षिण –पूर्वी ठंडा पान झरे वाला सरई अऊ मिले –जुले बनमन मा पाये जाथे। तीखुर के पौधा मन के पान हर कार्तिक –अघ्घन मा (अक्टूबर –नवम्बर) सुखा जाथे।ओई बेरा मा आदिवासी मन ये पौधा ल अपन काम बर खोदके इकट्ठा करलेथे । चैत–जेठ (अप्रैल–मई) महिना मा बनक्षेत्र मनमा ये पौधा ल पहिचाने बर मश्कुल होथे काबर कि येखर ऊपर के पान हर सुखा जाथे।

दवाई बनाये के येखर काम – तीखुर के कांदा हर मीठा ,पौष्टिक अऊ खुन ल सोखे वाला होथे। येखर जरी हर कोड़, जले ,अपचन ,सांस के रोग ,पीलिया के रोग ,पथरी ,आंत के छाला अऊ कई ठन खून संबंधी बीमारिमन ल दूर भगाये बर काम मा आथे।तीखुर जियादा उमर के आदमी अऊ लइका के कमजोरी ल दूर करेबर बहुत बड़िया काम मा आथे। तीखुर के कांदा हर येखर काम के भाग होथे। येखर कांदामन के खातिर वर्तमान मा येखर खेती घलो करे जाथे। तीखुर पाउडर मा स्टार्च ,आयरन,सोडियम, कैल्शियम, विटामिन–ए अऊ विटामिन–सी घलो पाये जाथे। येहर उपास के फलाहारी मा घलो काम मा आथे। तीखुर ले बने खोवा के जलेबी ,मिठाईमन ,शरबत आदि हर घलो फलाहार के काम मा आथे। येखर अलावा आईकिरीम अऊ दूध मा उबाल के घलो येहर काम मा आथे। आयुर्वेदिक ताकत बड़ाये बर दवाईमन मा घलो तीखुर के कांदा के अर्क हर खुन ल सुखाये के बीमारी ,जर, जलन ,अपच ,पीलिया ,पथरी ,अल्सर कोड़ी अऊ खुन संबंधी सब्बो बिमारिमन ल दूर भगाये के काम मा आथे ।तीखुर के कांदामन ले एक सुगंधित तेल घलो पाथन। जेखर काम हर दवाई बनाये बर काम मा आथे ।

रासानिक संगठन– तीखुर पाउडर के तत्वमन के रासायनिक संरचना मा प्रति 700 गिराम मा संतृप्त फैटी एसिड –0.10 गिराम वसा–0.06 गिराम ,प्रोटीन –0.01 गिराम कार्बोहाइड्रेट्स –82.0 गिराम,फाइवर –14.00 गिराम ,सोडियम –0.02 मि. गिराम कैल्शियम–0.09 गिराम ,आयरन –13.00 मि. गिराम विटामिन –ए 3407 आई यू,विटामिन सी–74.00 मि. गिराम पाये जाथे।

खेती के तरिका –

भुँईया अऊ जलवायु– तीखुर के खेती के खातिर कुधरा माटी जोनमा जल निकासी ल बड़िया बिवस्था हर सबले बड़िया होथे। थोड़कन छायावाला अऊ खुल्ला जगहमन मा कांदी जरीमन के आसानी से बाड़थे। येखर बर 25 डिग्री से 35 डिग्री के ताप हर बड़िया होथे।

खेती कि तियारी – तीखुर के खेती के खातिर छॉटे खेतमा ,(मई) जेठ महिना कम से कम दू बार हल से अच्छे से जोत लेथन । जोन मा भुँईया मा जीवाश्म हर समाप्त हो जाथे। ओखर बादमा 10–15 टन गोबर के पाके खातु मा खेत मा प्रति हेक्टेयर के अंदाजन मिला देथन अऊ फिर से जोत लेथन।

रोपे के तरिका – तीखुर के खेती बर तियार खेत मा अंदाजन सबले पहिले 30 से.मी. के दुरिया मा नालिमन ला बना लेथन। अषाड़ महिना (जून) महिना मा आखरी सप्ताह अऊ (जुलाई) सावन महिना मा के शुरू मा शूली मन के निकलथे तहंले कांदामन ल जीवित समेत टुकड़ामन मा काट लेथन। येखर बादमा कांदामन ल नालिमन के बीच मा चढ़े माटी मा रूपाई कर देथन। पौधामन ल 20–30 से.मी. के दुरिया छोड़के लगाथन। कांदामन के रूपाई ल करत समय गड्डा के 5–10 से.मी. ले जियादा गहला झन होवे येला धियान मा रखथन।

सिंचाई – रूपाई के बाद मा तुरते पानी देथन। मानसून मा पानी नि गिरे की स्थिति मा पानी ल सींच देथन । यदि जरूरी हावे त पानी गिरे के पहिले घलो पानी ल सींचथन।

निंदाई –गुड़ाई– बरसात जैसन खतम होथे ओखर बादमा 20–25 दिनमा निंदाई –गुड़ाई करके खरपतवार ल निकाल देथन अऊ कांदीमन ल माटी चढ़ाथन जेखर से कांदीमन के बड़त हर ठीक ढंग मा होवे।

रोग अऊ ओखर रोके के तरिका – तीखुर के उपजमा कुछु प्रकार के रोग अऊ कीरामन के प्रकोप नि होवे बल्कि कभु – कभु पानमन हर हरदी रंग के हो जाथे अऊ ओमें करिया –करिया धब्बा घलो दिखाई देथे। येला कीरामारेके दवाई जैसन मोनोक्रोटाफास ल काम मा लाथन।

कटाई अऊ इकट्ठा– तीखुर के उपज 7–8 महिना मा पक्का होके तियार हो जाथे। मांघ – फाल्गुन के महिना(फरवरी–मार्च) मा जोन बेरा मा पौधा के जम्मो पान हर सुखा जाथे त हमन ये जरीमन भुँईया ले निकाल देथन। प्रमुख जरी कांदामन ल नान्हू–नान्हू फिंगर के जैसन कांदीमन ल अलगे कर लेथन। फिंगर कांदीमन ल पानी से साफ कर लेथन अऊ छांववाला जगहमन मा सुखादेथन। संगे संग प्रमुख कांदीमन ल बीजा के जैसन रूपाई बर संभाल के रख लेथन। कुछु किसान मन तीखुर के जरी कांदीमन ल ओईच खेत मा गड्डा खोदके